

अद्याये १३ वी

y. १८



आध्यात्मिका॥१३॥



आध्यात्मिका॥१४॥

(v)

श्रीजगद्यापनमः ॥ संस्तुतापासावकेवल ॥ जालीप्राहतभाषारसाळ
 कीस्थाति जन्मापासावसवल ॥ मुक्तप्रतितेजाकनिपूजे ॥ वंद्राचे
 आंगीनिफजेवांदणे ॥ कीदिनकरापासावजैसिंकीर्णे ॥ कीसंखुदिपापासा
 वसोने ॥ दिव्यबावणवसनेपूजे ॥ कीहश्चापासुननवनीत ॥ कीअभा
 सापासावमसिअद्भुत ॥ कीयुषदापासावप्रज्ञत ॥ शर्वराजैसीकहन
 रमे ॥ कीयुष्यापसुनिपर्मत ॥ कीरभेषासुनकर्षरसीतल ॥ कीमगाम
 सावयरीपन ॥ मगमदजैसानिपूजे ॥ ब्रथालक्षणासरितानाश ॥ सा
 हितरंगजापरमित ॥ प्रेमक्लहरीयाजद्भुत ॥ ऐक्यायेत्परस्परं ॥
 अस्ताहो निगोड्यान ॥ परीस्त-कीनयेवाखविटा ॥ हृष्टान्तेविषयं ॥
 उर्ण ॥ रसनवटेसर्वशाष्टि ॥ रत्नवाणीमेस्याठार्णि ॥ तेसेवशांतग्रंथमा ॥ १

(28)

शती॥ क्रमदावांवोनिस्तोवरी॥ त्रोभानयेसर्वथा १॥ आलंकारज्ञाने
नरतिं विनंती॥ द्वीगगनमंहितउडंगावंती॥ क्रीमानसिंहं सावांवुति त्रो
भानये सर्वशणा २॥ क्रीमननांविणाश्रवण॥ क्रीसद्गवाविणाक्रीतेन
क्रीप्तेत्रसेंविजेविण॥ हषात्तवात्तुनग्रंथतैसा ३॥ क्रीसभाजेसीं
हिताविण॥ क्रीसुस्वराविणगायत्री ४॥ क्रीविणतपात्तवरण॥ हषांते
विणाग्रंथजैसा ५॥ क्रीविरक्तविणासाना॥ क्रीप्रेमंविणभृष्टभिजन॥ क्री
रानेंविणभक्तपुण॥ हषांतेविणप्रवैसैसा ६॥ अधर्मवांउखारणं
त॥ हषांतह्यविराजत॥ तेष्ठीर्वैज्ञानंदप्रवेंयंहित॥ मदासेवितस्वा
नंहे ७॥ आतांजारण्यक्रांउवसंतवन॥ येषेंवागदेविवान्तीपुण॥ क्रीष
क्रीउड़हासेंवरुण॥ मंतसज्जनपरिसोत ८॥ यासोन्वीत्रकुटीदु

निरचुनाष्ट॥ सीता सोमि त्रासमवेत्॥ निजभक्तास्मिउधरीता जगन्ना
 शजातस्मान् दृश्या पंशें जनकूज्यामात्॥ सकूलत्रष्णि वेआश्रमपा
 हत् ब्रह्मोदग्रावैर्वरीयं त॥ रथुनाष्टकृति॥१४॥ कोठेंवर्षकोठेंजाय
 न॥ कोठेंमासयस्युर्णि कोठेंगेकरात्रैन॥ कोठेंपंचरात्रकूर्णिली॥१५॥
 मग्न्यत्रीकीयाप्राप्तप्राप्तं प्रेतास्तात्तद्वाजनकूज्यापति॥ तोऽदेवीली
 हत्तात्रयेमुर्ति॥ अविनद्राहि ते जयाची॥१६॥ सीहुद्रीवरीशेसाम्॥ आज
 आजीतघनः ग्राम॥ हत्तात्रयहेष्युप्रित्वा हेतस्मेतयाते॥१७॥ सीरसाग
 रीव्यात्तहरीया॥ ऊबंवर्गोनयेकूवट्ठीया॥ क्रीज्यालहरीमीत्रतनया॥ ये
 द्रेठाइंगिन्हति॥१८॥ क्रीनानावर्णगाइ॥ वरीउधासीवर्णनांनाहि॥ तैसाज
 नकाव्याजावाइ॥ आठीअत्रतनयेसमरसले॥१९॥ आवत्तारहीउदंड

(3A)

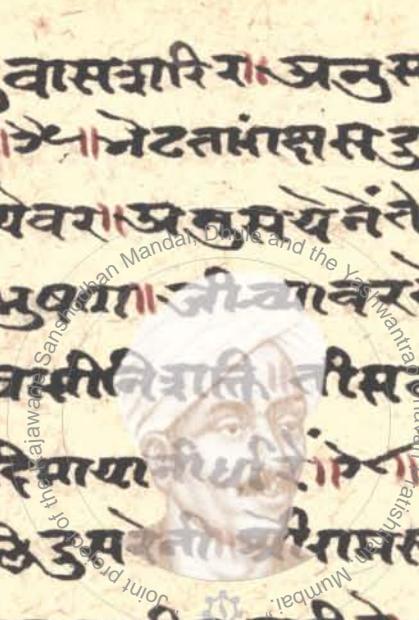
यति। सर्वं बीमा गुति विलभ्य जाति॥ तैसीन हेहत्तात्रय मुर्ति॥ नाशक उर्मा
स्त्रियं से नां॥ ३॥ एषणी ब्रह्म पुसा कलेण॥ हेहत्तात्र ये रप बोतिलेण॥ अम्बवा की
ठोकन पात्रं तरले॥ जीव आपार त्रीभुवनिं॥ ४॥ सकलासि इति षिनीर्ज
रा विधि वाचस्य ति ऋचीदरा॥ हेहत्तात्रय हस्तानि सादरा॥ त्रीकाळ ये ति
निजभावेण॥ ५॥ याद्यायी सीह दीपवीरि॥ हेहत्तात्र भारत उत्तरादि॥ सर्वब्रह्मलं
उर्मीदै वतेंधां वहति॥ आद्य धुत रत्नं पाहा वया॥ ६॥ घेतां हेहत्तात्रये हेहत्तात्र
हेवा सीमा मथै वटेषुर्गा॥ प्रसा तत्या सिहाति प्रसन्ना॥ वरहान्यावणा॥
७॥ ज्ञासी प्रयागी प्रतः स्नान॥ पंग्याके शरीरं आनुष्ठान॥ कुरविरपुरा
तं केउन॥ भीष्माटा माध्यानिं॥ ८॥ ज्ञास्ताजातां वस्तरमणी॥ सीह दीम
जातय रतोनि॥ तोहेवा वेभार कुरजे उनि॥ वाटया हति जागेधरा॥ ९॥

सीहिदेवताहिगांवरा॥ येक्ष्वरीहोयेजप्तजपकार॥ जासंव्यवाधावा
 गजरा॥ यद्यपीभूतैर्वति॥ नदत्तचयेभूत्तदेवतांदशी॥ सवलैव
 मेंद्रेंजेंशृष्टी॥ तेंतेंपापांधालीस्तिष्ठी॥ उत्त्रेठाक्षतिक्षरस्तेऽनिं॥४॥
 क्रीतांदत्तात्र येस्मरता॥ तुतेऽतेष्ठतिउठान॥ मांउपासकविघा॥ करं
 कवणजा क्रेल॥ तेष्ठासैसत्तवामि ग्रावधुत॥ जोऽजात्रीव्यापुण्येमाहं
 पर्वत॥ तयासीवंदुनिरसुनाश॥ आत्रैदव्याघेत्तें॥५॥ तवंतेष्ठानुस
 यासति॥ सीतासामतिसीवं दिति॥ सीतेसीत्ताकीमुण्डिष्ठीनि॥ वरदेतियंता
 ली॥ तेष्ठापुछेनिझूरीवं कुंकुमकाटिले॥ तेंत्रीतेवेक्षपाकीलाविले॥
 आमलकवत्तनेसविले॥ जेंनमढेनविटेक्षमांति॥६॥ गवांपातलासुम
 नहारा॥ जोद्रुधीनसुद्रेसावारा॥ जेसान्तियनुतनदिनकर॥ तेजज्ञानुमा



४९

त्रद्वेनां ॥३॥ सीतेवं सुवासारिग ॥ अनुसयाकरीनि रंतर ॥ उपसुवत्से
 अंबर ॥ परिपुर्णहोयेदें ॥ ५॥ नेटतांससुदुर्धर ॥ सीतेसीभयेनवटे अनु
 मात्र ॥ ईसादित्य त्रानि भृत्येवर ॥ असुमयेनंतेसमझ ॥ ६॥ मवें कीरणुके
 वें दर्शन ॥ येतर खिकुव्यभुषणा ॥ जीवावरदें जागविंषुर्ण ॥ नीः से त्री वेलि
 धरत्री ॥ ७॥ तेषु वीटवासीनवालि ॥ तेषवं दीप्रणोध्यापति ॥ तेष्वीग
 पांकीमुद्रप्रहस्ति ॥ आदिमाया निर्वाह ॥ ८॥ तेष्वशमआवतारीकीजन
 निं ॥ तेष्वीकौशल्याज्ञालितुम् ॥ ती श्रीरामस्तविष्णुलोनि ॥ जयजयमुल
 कीठनायक ॥ ९॥ जयजय आदि कुमारीके ॥ जयजय मुद्रपीठनाइके ॥ स
 द्रवद्रव अनंग लक्षणपके ॥ जगदंबिके षुडप्रहस्ति ॥ १०॥ जयजय भारत
 वत्रीयेभवानि ॥ भवणोचक्षवत्तवरतायनि ॥ सुभद्रकारीके हीमनगन



Sanjeevan Mandal, Dhule and the Yashwantrao
 Nanavati Sahayadri Mumbail Joint Project of the
 Mumbai, 2018 Number

(5)

हीनि॥ त्रीपुरसुंदरिजाहिमाये॥४॥ जयजयआनन्दकासारप्रगाढीये॥
 जयजयप्रानं पृथीवीम्बपावके॥ अनाथसिद्धिसोसदायत्रे॥ मर्वप्रप
 वेकमंडली॥५॥ जयजयप्रिवदानसंब्रतिक्रे॥ यद्यनयनेदुरीतवन्ना वैनव
 वत्रे॥ जये त्रीविधतापमोर्वत्रे॥ लिङ्गजन्मपावकेयापर्णी॥६॥ तदमुख
 ऋषब्रह्मोभादेखोनि॥ विघ्नविभग्नविरोगनि॥ ब्रह्मांशीक्रवाङ्मंतीन्ही॥ सा
 नंदमदनिनीजविति॥७॥ त्रीविभग्नविरोग्नीवाक्त्रवें॥ अंबेलुंनिर्मीसीवौ
 तुवें॥ जीवतुम्मंस्वरुपनोऽव्यवे॥ स्नणोनपउच्छेयावर्ति॥ उद्याविवतुम्मंस्व
 रुद्यीसावन्वीता॥ स्नणोनियांतोनित्यमुक्ता॥ ब्रह्मांकंदपदहातायेततुम्मे
 त्तपेनंजननीये॥८॥ मेल्लुनियंवभुतांवामेना॥ तुवांरवीलेंब्रम्हंउ
 रवत्रा॥ इलापुरतांवाल्काठा॥ सकोनिर्मुक्त्रवर्तीसीतुंजा॥ एसंस्तवोनिष्या

58
पपावो सीहृदीवीरि दिनत्रये क्रमुनिं अत्रैक्र मित्रीआ हांचे उनि इस
तापं शेवा लीछे॥ इवा अत्रीत्यपेरघुपति॥ येवनीरात्र स वसति॥ जतनक्र
मिसीता सत्ति॥ शृणा हिपरति नविजे॥ इवा आवष्य हांगोनिक्र दनेत्र॥
उटे वालि उत्तरारीमित्र॥ वाठीसीभागं क्रेष्णावतार॥ वीरसोमित्रयेत्से
॥ इवा प्रागं पांगलभासीनि॥ पांगलकाम ग्रवि शजननी॥ लिरस्त्रिरहंसगा
मीनी॥ पांगलजननीकरीवाले॥ इति हावतां प्रैमीक्र-यां॥ सोमित्रस्त्रागे
जीवनपनां॥ त्यानं द्रिपागेयारि ली गानोहनां॥ उमेंगहावेंसणभरीध
॥ वन्वन ऐक तर्जनान्मोहन॥ उभाराहि लायेपस्था॥ परम्परुदारसुहांस्थव
हन॥ परतोनिया हेसीतेक्षे॥ इति तवंतेसकुमारजनकवाळी॥ हृकुहृकुजा
लेपियामांजवठी॥ ज्ञेविसारासारवि वारनकाढी॥ जात्मसुवाम्बीपाविजे

The Rajawale Sanskrit Mandal, Drule and the Yavatwantra
Joint Project of the
Mumbai University and the
University of Hyderabad

(६)

॥४॥ परमसकुपारवेष्टहोऽनी॥ मागीं वालतां कदीजाली॥ जवकरीयेउ
 नितेखै सल्ली॥ मगसमुक्तीकृशीलें॥ ५॥ परमसल्लुजहोउन॥ द्वे लें कीची
 तहास्थवदन॥ जेकोंनिवाति रघवदन॥ ६॥ सेंववणावोलीली॥ ७॥ द्वावे
 जाहंदा रविकुब्जुषण॥ ८॥ क्रं दह हयेकीन्मयेलेवनां॥ वरणीया
 उतांर बुनंदनां॥ बहुंश्रमणावहातिलहो॥ ९॥ परमसकुपारछसुमण॥ व
 रणीवालतांसुनंदन॥ दृशद यमित्तणौन॥ अग्रसागर बैसावें॥ १०॥ रा
 लोत्पक्षेसकुपार॥ त्यहुनिंतुमन्वीयहेजातवा॥ अस्त्रासंधारामित्र
 ॥ ११॥ वरणांतकीसुवावहार॥ १२॥ जेंज्याह विवेंजन्मस्तान॥ तेंमीनिजवें
 सीक्षा हेन॥ सीतकउटवेंधुउन॥ मगखुरी पाश्चात्यभरी॥ १३॥ जाजी चें
 येगांवितिदुर॥ अहेहेन कठेसावार॥ १४॥ कृतांपद्मासीचेंउतर॥ द्रवला १५

As the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the
 Joint Project of the University of Mumbai,
 Chavhan Pratishthan, Mumbai
 and the Raigarh Sanskriti Mandal, Raigarh.
 Dr. S. V. Venkateswaran

(69)

रघुविरजंतरी ॥६॥ हायोहे सकुमार वं पवक कर्णी ॥ वरणी वाल तां अमली
॥ दोलतां ने त्रवक मंडी ॥ प्रश्नकुमार छीरपुष्टि व्या ॥७॥ प्रगाञ्जाए उपाख्य
करणा ॥ कुरवाढी तसीते वें वहन ॥ प्रस्तवं दी हस्तक ठेउन ॥ श्रपसं उणी
हसीये लग ॥८॥ परमसुख वाली जनक वही निः ॥ प्रगाञ्जाए उपाख्य
वें करणी ॥ श्रेष्ठामान्वी पदेस्तुते प्रभालु निः वुरित आसे ॥९॥ मगड ने
निवाली लापघुविर ॥ पद्धीसी भाग गां वतार ॥ यमागं जनक ज्यास्तु
मार ॥ हं सगति वमकतम्य ॥१०॥ तो वर भावतां दोनि ॥ वनवरे पक्ति भयेक
रुणी ॥ विरोधराहमते वस्त्वं ॥ जालाधां वो निष्पाव साता ॥११॥ माहं भया
नविविग्नालग्नीर ॥ खं दीरां तार तैसे नेत्र ॥ द्रवां दी वर्वी लिमे उर ॥ जावर
शोंटी मोक्तु लीया ॥१२॥ तैसा जानी वावो घण्टार ॥ तैसी जी कुल वयवि तवा

Joint Project of the
Shetajiawade Sanskrit Mandal, Dhule and the
Vaidyanath Chavadi Sanskrit
Mumbai.

हेरा कर जडा वापर्वत शोग ॥ तैसें जारीर है सत से ॥ गठान नर मुंजा आ
 प्राणा ॥ हुति उधर्वशुद्ध परीयहा ॥ सीहु गजवन वरा ब्रामेकपा ॥ दों वीला
 माल प्युक्तावी ॥ ध्या जाता देव जास ब्राह्मण ॥ रगरिता देव चेष्टा लुन ॥ वारे
 सील तप्रहरं करण ॥ दृष्टा पारि तपम करी ॥ उदं जात से रघुनाथ ॥ माप
 नविरोध जाल प्यावता ॥ ज्ञाना धरूरी जाक्षम्भान ॥ जात जाल पेवे
 ने ॥ जैसात व्युर ग्रहीति शोर ॥ पनकंभालायेवे उनि ॥ की आकर्षा तमा
 प्रयेउनि ॥ नेतउबलुनि हारीयते ॥ की हाम जा वेंत तिघोनि प्राना ॥ जाए
 वोरुन मात्रा पेउन ॥ तैसा विरोध कुर्जने ॥ जायेवें द्वरुपयिण ॥ अे वृक्षलांस
 रं वृक्षयंति दे रवा ॥ ज्ञान विल्लोमि त्रकुछी लक्षा ॥ धां वं धां वं जायो ध्याना
 यक्षा ॥ जग हं ध्याप का दिन बंधु ॥ ॥ न ॥ परतोनिया हेरा जीवास ॥ तैसं दग

The original Sanskrit text in the manuscript is written in a circular watermark-like style. It includes the following text:
 विजयावाचसंहिता संस्कृतम्
 विजयावाचसंहिता संस्कृतम्
 विजयावाचसंहिता संस्कृतम्

न तु गते दृष्टि स ॥ न यतिनादि से प्रत्यक्ष ॥ क्रोधी कुरु गता तो ॥ ५५ ॥ पनु व्यव्य
द्वयनि जनक ज्यामाते ॥ या चारी हे तेक्षां विरोधातां ॥ जैसे मृगे दें माहां गजा
ते ॥ ६६ ॥ सुपर्णं हाक पोष्ट ली ॥ ७६ ॥ सपान उपातां गे लखाण ॥ वय छ अति च
य बहु न ॥ ता ल्का उद्धव घे उव उमी जाण ॥ क्रै लें वनाने मुच ॥ ७७ ॥ आरे राश
साधीं धीर ॥ माझा बापा चारा र बापा ॥ उसं जायु व्यसाग रात्वे निरा प्रदी
ल आतां निर्धरि ॥ ७८ ॥ माहां चापा भ्राति भग देख ॥ क्रै सा ने उनवां चेल जं
बुक ॥ आरि याचा कुमारुषक ॥ नारी हे साने जांग ॥ ७९ ॥ काला चेहा तिथा
दं जांग ॥ चेवि ने उं भक्षे श्रेणीं ॥ वासुदी चाविष हंत स वेग ॥ हर्दुर खेवीं
या रिउ दें ॥ ८० ॥ वीरो धनुणे लं मान वधीट ॥ गोवीसांग सी जाचाट ॥ परी तुमें
द्वरीन पीढ ॥ पुष्टी चातं जातं की ॥ ८१ ॥ ईमें राश स बोलेन ॥ ज्यान विस्वा

Joint project of Sanshodhan Mandal, Dhule and the
Chavandura Research Foundation, Mumbai.

(४)

ते रेडन॥ धां विनलाप सरन वदन॥ राघ सौमि त्रावरी तेधवं॥ ८॥ कूरी तिथं
 क्ष्या वस्यु ब्रंस उण॥ रामें सोहि लेदोन बाण॥ खानी हन्ति जाउ उउन॥
 गलेवेउन निराक एंशा॥ ९॥ सत्रेवी पर गृषु बारे॥ सीर क्षेत्र कौश अमाकु
 मरे॥ विमानि है कज एज पकारे॥ १०॥ वास भार वर वति॥ ११॥ बी गेध पावला
 दिव्य बारी र॥ रामासि विन दिजो उनि वर॥ द्युगो गी गंधर्व लुंबर॥ नाम माझे
 रघु विरा॥ १२॥ गायन करा वान् रहे॥ वशष्टि ने चोला विले॥ तोंगां मध्य
 पान करे॥ आंतजा ले शरीर॥ १३॥ बृहीन उपटे पैशर॥ मग कुवरे ले रिते
 शरपवास्त्र॥ द्युगो तुंहो इनि ग्रावर॥ माहं यो रवतांतरी॥ १४॥ मग म्यां करतांभा
 वितांशोर॥ प्रसन्न जाला कुवेर॥ कुजवधी लर रघु विरा॥ तैं उ छार होये लुशा॥
 १५॥ राघवा वर वेंहा सहस्र॥ वीवि वरे ये शंरजानि चर॥ माश्य वीभेवों रजा॥ १६॥

७

४५
त्रीरा॥ वक्तव्यांशोरकां पतसे॥ ७॥ आसोमाशाउहारजालायेण्ये॥ स्मृते
निवंसैलारयुनाय्॥ द्विप्रानिवैसोनि त्वरिता॥ स्वस्तु नांत्सिपावल्ला॥ ८॥ द्वि
राधरामें प्रधीलावनी॥ वहुंकरेपसरेकीर्तिष्वन्नि॥ जैसेंतैल्यपरतां जीव
नी॥ यस्सोन्मिज्ञयेसूचार्थ्ये॥ ९॥ कीसत्याजीसानदेतांनिर्मग॥ कीर्तिनिंभेदु
फंउग॥ कीडुज्ञनासीउद्ग्रेकवक्तव्यांपसरेवहुंव्रेता॥ १०॥ कीकुव्यवं
तासीक्रीतांउपकार॥ कीर्तिवादसवितर॥ कीसत्समागमेंआयारा॥ देवा
जानप्रगत्ये॥ ११॥ आसेज्यानकिरेनेयन्॥ नहीश्रीरामावेवरण॥ मुगेतुम
वापराक्रमजायीसंधान॥ आजीद्विपाहिता॥ १२॥ वीरोधउहरोनजातों
तेषांग्रज्यीलेरघुताया॥ स्वात्मीतवदर्बनांकीजाता॥ बारन्त्रायिपाहा
तसे॥ १३॥ हरुषेंद्रिप्रानघेउनिइंद्र॥ स्यासमुलज्ञालासावरा॥ परीतुज

Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com

(१)

पाही उपांविण मुने श्वरा॥ न जाये वी क्रमपदा॥ ५५॥ वैक्यं आदेतो हीली
 वर॥ स्त्रौ न इही तत्त्व कोरा॥ तैसाटृ सीपा हावणा रामचंद्र॥ शारभगतो
 इछीतसे॥ ५६॥ ऐसं विग्रह सांगोन॥ प्रगतो गोचर उद्धोन॥ रथा अर्था अशांगा
 संरघुनंदन॥ जाताजातु तेवराली॥ ५७॥ प्रगतु दं पुदं रघुनंदन॥ प्रगते
 अपान कि वीक्षण॥ तीव्रे वासीति लुप्ता॥ वहुं व्रत पाहातसे॥ ५८॥ आपां योति
 लर रजनिं चर॥ स्त्रौ दि व्यापासि तावेत व्राय बलि णा सुप्रित्रे चकु भर॥ पाति
 रामवत्येतसे॥ ५९॥ तों दृष्टु ये सिस्या शृणा॥ गङ्गां ठाँ वैसे पद्मनयनां॥ श्वाम
 रकुनि द्युगे लसु मणां॥ कां होपा हणां जाजी वृक्षेते॥ ६०॥ तों दृष्टात ली मर्वि सार्शी
 जो वरावर वीतय ति सी॥ पद्माश्रि वा मार्ग लू श्री॥ उभात हे स्थाने क॥
 ६१॥ एटं वार भ्रगाक्षे या असां सरघुवि रा॥ येताजातु गदणा सापर॥ वहुं क

१४
प्रोत्तिपांविनलेक्षपेश्वरा जैसेपुरगंगेवे॥ परंडुनिसप्राधीतपत्त्वरणा॥
उगवगाध्यंवेब्राह्मण॥ वारभनिघेवेगंदरुन॥ गमदरुनानंतेकाढी॥
वारभतोमाहंत्तथि॥ परीक्षुष्टगबीष्टभरल्लात्यासीदीपद्वारीरधरताम्भे
यीसपि॥ येताजात्तात्रीगामांव्यामे॥ परीलेङ्गतीरक्षांकुन॥ धींवेवितोब्रह्मणा
॥ शठभरिदिप्परयधरणा॥ गमदरुनानंपत्तलाध॥ ऐसेदेवोनत्तथिवेभार
॥ साशांगनमितरामसौमित्र॥ वारभगासहितवीप्र॥ राघवेहंज्ञात्वांगीले॥
वारभगावेगामांतं॥ राहत्तेजस्तरयनाश॥ सीतामौपित्रासमवेत॥ गमपु
जीलागारभगे॥ उमुप्याक्षयितेउसता क्रंशेखालेंकापेक्षांयत॥ वारभ
उघ्येनिहावित॥ सौमित्रात्मेंतेधवां॥ हृंस्योदर्मवित्तीभ्रोगीत्यांवीण॥ न
सुटेकहांदे हेबंधन॥ राजार्कहोक्षांसाधुसज्जान॥ क्रमगहणसोउनां॥



चीक सितुपजलीलसुप्रदानं॥ सुणेवरमागाहोरघुनंहनांत्रषि द्वयोऽस्ते
 दव्रस्तानां॥ प्रजतेन्सीठेसर्वशा॥३॥ समिक्षोदवेंस्ताननित्य॥ तेणंहेऽदारीर
 उल्लत॥ ऐव्रोनिजावतिज्ञाक्रान्तं॥ क्रायेवोल्लतत्रषितें॥४॥ आमंहीतुम्हांसी
 उद्दरेउना प्राणः व्राक्षीव्रगमन लांगत्रसमतां दंउविष्ट॥ उद्दरव वं
 आवलग॥५॥ क्रषि-वीजाशांघे उनिल रेत॥ उटेंगोलेरघुनाश॥ क्रषिकां
 वाविसरपडत॥ एरिमयेतगोतमात्रि मि॥ इनाहोंतौतमीतव्रितांस्तान॥ तेक्षुं
 आठवलेंत्रषितेववक्ता॥ प्रगधनुष्यासीत्त्रुतनिवाल॥ सोहिलासपन्नता
 गां॥६॥ वयव्वेसा वायसाल॥ क्रषि उच्छ्रमं पुटेंकुपक्षेलग॥ वायष्
 वेवात्रापत्ताढा॥ कुपउच्चंबवर्भाउल्लोदवें॥७॥ तेशेंकेव्वांयेव्रसानसा
 वायत्रषिवेंजलेंदिव्यजसीर॥ प्रगाविप्रानिं वैसोनियांवीप्र॥ शाक्रेंनेत्तरास

Joint Project of the Sankalpan Mandal, Dhule and the Yogi Mantra Chavayana Pratishthan
 Number: १२

४५
४६
४७
४८
४९
५०

१०८

स्तुतिशास्त्रमांप्रति॥जाता जात्तजनकं योपति॥मार्गी
तादस्तीव्वहुं प्रिछति॥श्रीरामाचे सप्तमोमें॥१८॥नानां प्रकारी ये तापसी की ते
क्षत्रियां ग्रामीणी॥ये कवह प्रस्तुत्यावैसी॥वाहु लुचारे वोलतां॥१९॥ये व्रद्धं
तहीन्वहुजा॥कलठें सावधाकावे उच्चल॥नानं सौरनीजटाधरी सद्य का॥
उधखाहासी प्रव आहा रि॥२०॥आलाशारस्य तिर निवर्तति॥मापरमानं दहो
तां वीप्रांसी॥रघुयति सरी मेट ठो॥तथा त्रमुनिर्दिवरति न॥त्रीनयनावं जीव
या त्रीभुवन पति रघुनंदन॥युद्धं त्रयानि वाचि छा॥२१॥तों गो तमति रीयाकन
॥यां वाहु श्वररम्यस्त्रान॥तेष्व भुजी तुनगामनं पाम चंडे ऐ द्रिघे॥२२॥मध्यम
माप्सिसांग तितापसि॥ऐ शेषं हविर्णमाहां क्रषि॥यरम लद्यस्वीते जोमासी॥२३॥
सरप्रावाहां भाव्युरा॥२४॥सूर्यव्रगा क्षणातयाते॥पंच अद्यरा अमरनाथे॥पाठ

The Redawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Joint Project of Chavhan Prasarak Mandal, Mumbai.



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com